पूँजी निर्माण दर का निम्न होना : कारण एवं उपचार
Low Rate of Capital Formation : Causes and Cures

आर्थिक संवृद्धि का महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व पूंजी निर्माण दर होता है। समाज में व्यक्ति अपने संपूर्ण उत्पादक क्रियाओं को केन्द्रित नहीं करता बल्कि भविष्य के समृद्धि के लिए पूंजीगत वस्तुओं के निर्माण, शिक्षा के स्तर में सुधार, स्वास्थ्य स्तर में सुधार, वैज्ञानिक शोध आदि के निर्माण के लिए भी विनियोग करता है जिससे पूंजी निर्माण होता है।

$$\text{पूंजी निर्माण दर} = \frac{\text{बचत की मात्रा}}{\text{पूंजी की मात्रा}}$$

$$\text{अर्थात्} \quad k = \frac{S}{K}$$

जहाँ k = पूंजी निर्माण दर
K = पूंजी की मात्रा
S = बचत की मात्रा

जब K स्थिर है; तब S में वृद्धि से k में भी वृद्धि होती है। अर्द्धविकसित देशों में पूंजी निर्माण दर निम्न रहता है जिससे आर्थिक विकास दर निम्न हो जाता है इसके निम्नलिखित कारण है।

1. निम्न आय

अर्द्धविकसित देशों में कृषि तथा उद्योग दोनों पिछड़ा हुआ रहता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पादन निम्न स्तर पर रहता है फलस्वरूप आय का स्तर भी निम्न रहता है। जनाधिक्य की समस्या रहने के कारण प्रतिव्यक्ति आय निम्न हो जाता है। फलतः सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति इकाई के निकट रहता है और व्यक्ति को बचत करना संभव नहीं होता है।

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y} \rightarrow 1$$

बचत कम होने के कारण पूंजी निर्माण दर निम्न रहता है।

2. निम्न उत्पादकता

विकासशील देशों में कुशल श्रमिक एवं उच्च तकनीकी ज्ञान का अभाव रहता है जिसके फलस्वरूप साधनों का अल्प उपयोग होता है। पूंजी की अपर्याप्तता के कारण

उत्पादकता का स्तर निम्न रहता है। उत्पादकता के निम्न स्तर से राष्ट्र में आय एवं बचत का वृद्धि दर कम हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप पूंजी निर्माण दर निम्न हो जाता है।

3. आय के वितरण की विषमता

आय की विषमता के कारण अर्थव्यवस्था में अधिक बचत नहीं होता है। फलस्वरूप निवेश भी कम हो जाता है और पूंजी निर्माण दर निम्न हो जाता है।

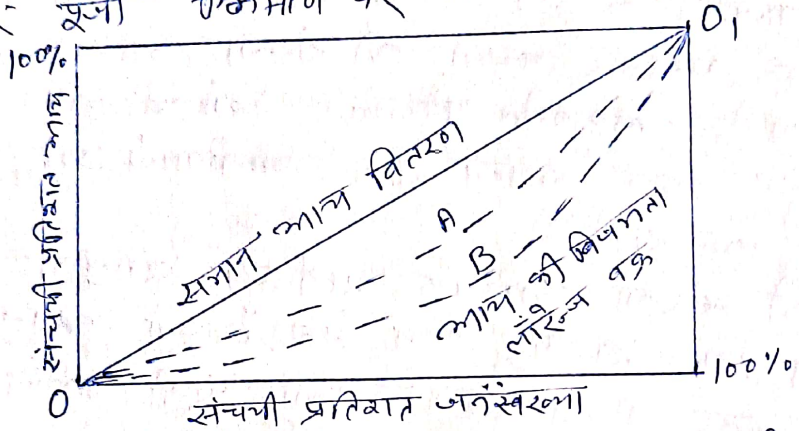

उपयुक्त चित्र में OAO1 रेखा पर आय की विषमता कम है जबकि OBO1 रेखा पर आय की विषमता अधिक है। इन दोनों रेखाओं को लॉरेन्ज वक्र कहते हैं।

4. जनांकिकीय प्रवृत्ति

विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र रहती है। राष्ट्र का अधिकांश साधन बढ़ी जनसंख्या के भरण पोषण पर ही खर्च हो जाता है। बच्चे की संख्या अविकसित देशों में

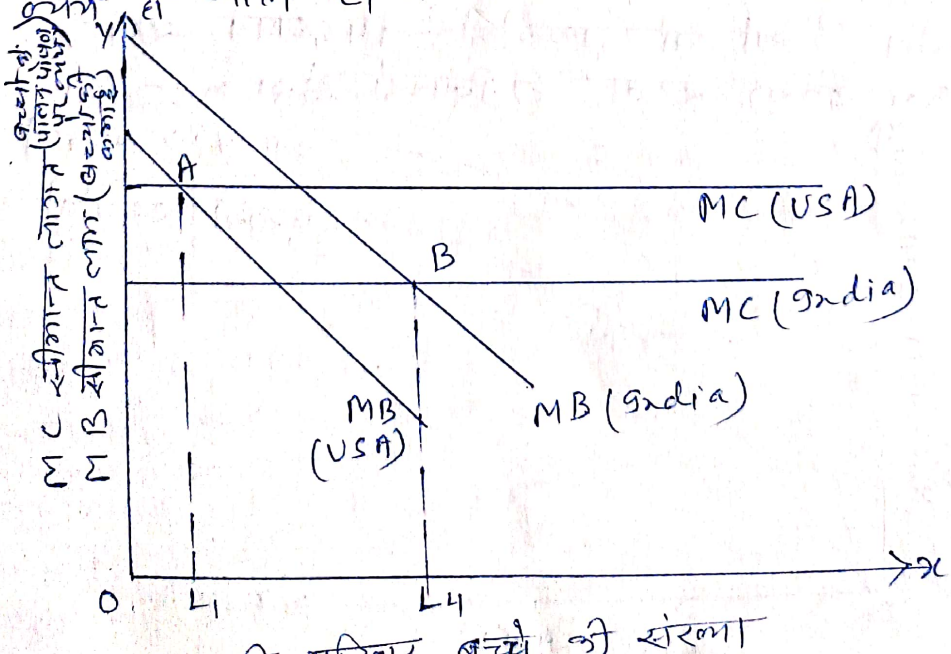

विकसित देशों की तुलना में बहुत अधिक रहती है। उपयुक्त चित्र में सीमान्त लाभ एवं सीमान्त लागत को स्पष्ट किया गया है। चित्र में A बिन्दु पर विकसित देश में MB = MC तथा OL, बच्चों की संख्या तथा B बिन्दु पर अर्द्धविकसित देश में MB = MC तथा OL_4 बच्चों की संख्या को दर्शाया गया है। इससे स्पष्ट है कि विकासशील देश में बच्चों के भरण-पोषण लागत कम रहता है जबकि बच्चों के मजदूरी के रूप में सीमान्त लाभ अधिक रहता है जिससे प्रति परिवार बच्चों की संख्या अधिक रहती है। इसके विपरीत विकसित देशों में भरण पोषण पर अधिक मजदूरी से लाभ नगण्य रहता है जिससे प्रति परिवार बच्चों की संख्या कम रहती है।

बच्चों की संख्या अधिक रहने से राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग इस पर व्यय होता है जो अनुत्पादक व्यय है। बचत का स्तर निम्न रहता है और पूंजी निर्माण दर भी निम्न हो जाता है।

5. प्रदर्शन-प्रभाव

विकसित देशों के उच्च जीवन स्तर एवं विलासिता अनुसरण करने के कारण विलासीता वस्तुओं पर अत्याधिक व्यय होने लगता है और बचत स्तर निम्न हो जाता है जिससे पूंजी निर्माण दर कम हो जाता है।

6. तकनीकी पिछड़ापन

विकासशील देशों में तकनीकी पिछड़ापन रहने से औसत उत्पादकता कम रहता है जिससे देश में आय कम हो-

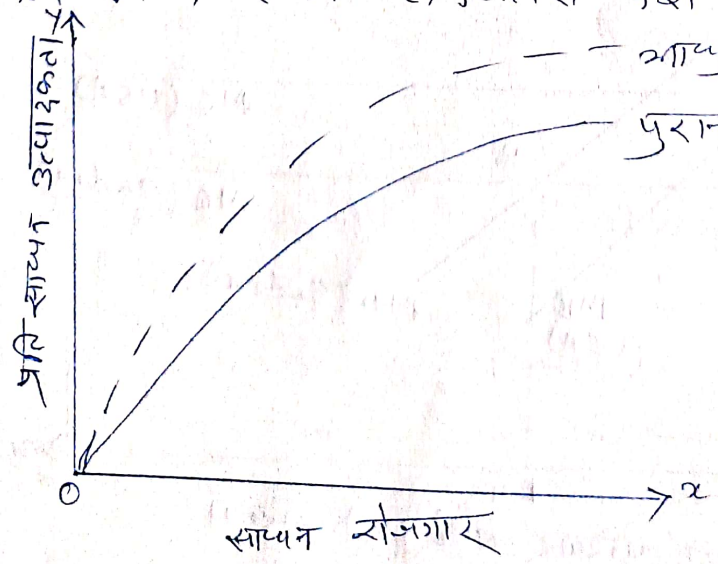

जाती है और बचत दर कम हो जाती है जिससे पूंजी निर्माण दर गिर हो जाता है। उपयुक्त चित्र से स्पष्ट है कि पुरानी तकनीकी दशा पर बचत औसत उत्पादकता तुलनात्मक रूप में कम हो जाती है।

7. हीनार्थ प्रबन्धन (Deficit Financing)

अर्द्धविकसित देश में पूंजी की प्राप्ती के लिए हीनार्थ प्रबन्धन किया जाता है। प्रथम चरण में हीनार्थ प्रबन्धन आर्थिक संवृद्धि पर अनुकूल प्रभाव डालते है किन्तु कुछ समय के-बाद हीनार्थ प्रबन्धन स्फीतिकारी (Inflationary) हो जाता है. जिससे लोगों की अपनी आय का अधिकांश भाग वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करने में लग हो जाता है और बचत दर गिर हो जाती है जिससे पूंजी निर्माण दर गिर हो-जाता है।

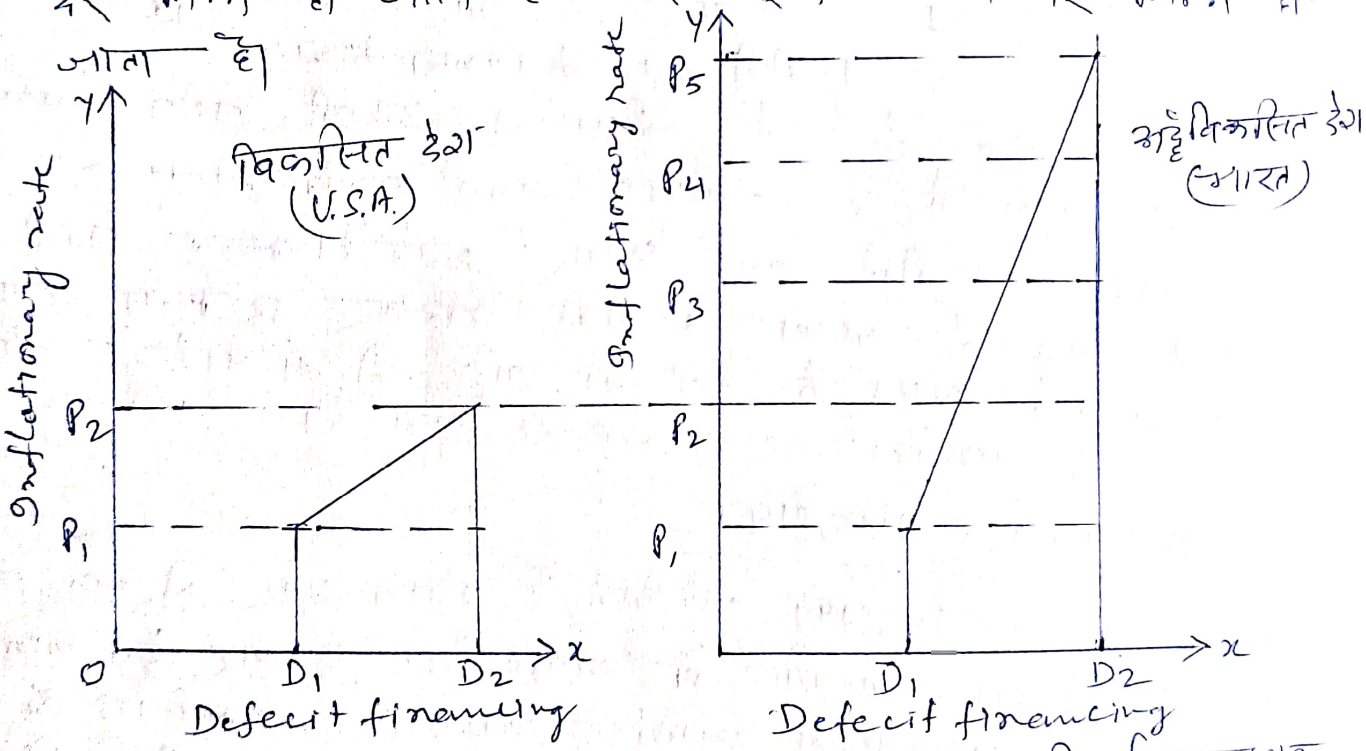

उपयुक्त चित्र से स्पष्ट है कि $D_1 D_2$ हीनार्थ प्रबन्धन करने पर भी अर्द्धविकसित देश विकसित देश की तुलना में तेजी से मुद्रास्फीति दर में वृद्धि होती है जो पूंजी निर्माण दर को गिरा देती है।

8. उद्यमी का अभाव

अर्द्धविकसित देशों में उद्यमी की संख्या कम रहती है जिससे विनियोग कम हो जाता है फलस्वरूप पूंजी निर्माण दर भी गिर हो जाता है। उद्यमी की कमी के कारण

तकनीकी विस्तार दर भी निम्न हो जाता है जिसे निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते है।

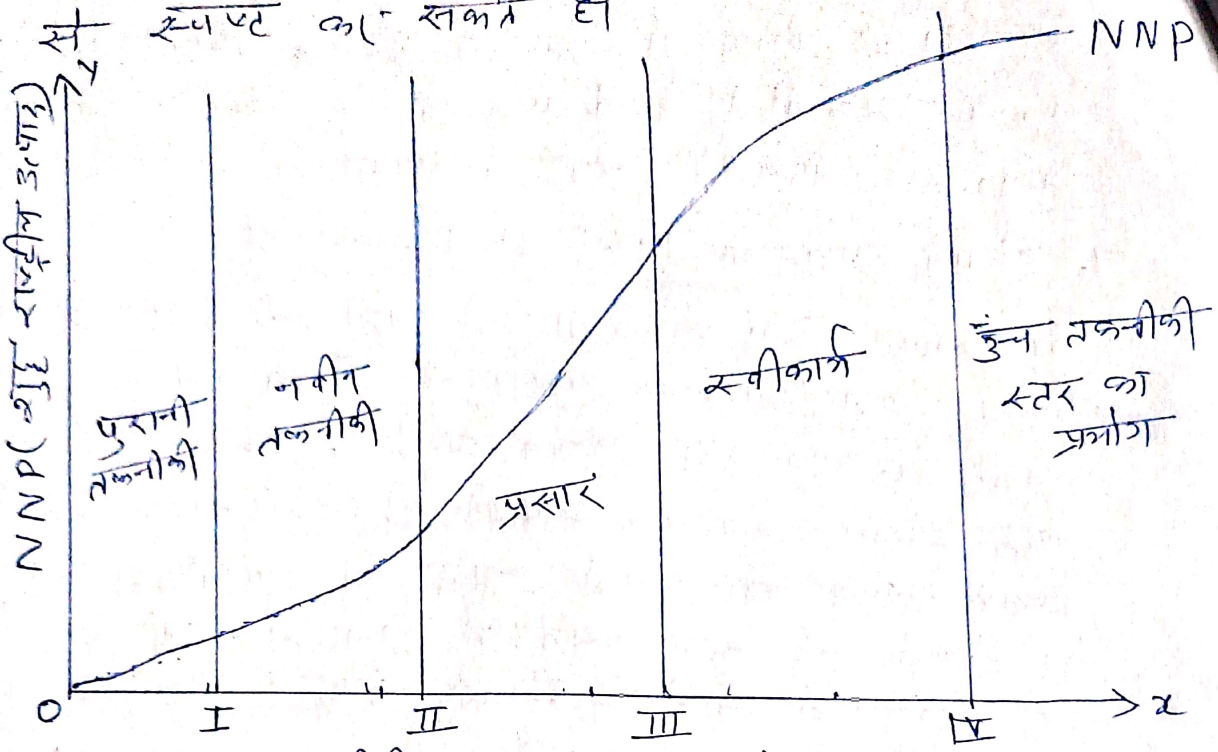

तकनीकी स्तर के विकास के चरण

अर्द्धविकसित देशों में अधिकांश उद्यमी नवीन अविष्कार के चरण में ही अधिक समय लगाते है। तब कुछ उद्यमी नवीन तकनीकी का प्रसार करते है। किन्तु उद्यमी के अभाव के कारण तकनीकी विस्तार दर निम्न रहता है। जिससे NNP में तेजी से वृद्धि नही हो पाती है और पूंजी निर्माण दर निम्न रह जाता है।

9. आर्थिक पिछड़ापन

आर्थिक पिछड़ापन का अर्थ है निम्न स्तर की श्रम की कार्य क्षमता, साधनों में अगतिशीलता, व्यापार एंव काम में सीमित विशिष्टीकरण, आर्थिक अज्ञानता, सामाजिक ढाँचा आदि तत्व सम्मिलित होकर अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करते है जिससे आय एंव बचत का स्तर निम्न हो जाता है फलस्वरूप पूंजी निर्माण दर निम्न हो जाता है।

पूँजी निर्माण दर तीव्र करने के तरीके

अर्द्धविकसित देशों में पूंजी निर्माण दर तीव्र करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए –

1. बचत को प्रोत्साहित करना

अर्द्धविकसित देश में बचत को प्रोत्साहित करने के लिए ऊँची ब्याज दर वाले बॉण्ड को बेचा जाना चाहिए। प्रदर्शन-प्रभाव को कम कर बचत के गुण को जनता के बीच समझाना जाना चाहिए।

2. बचत को विनियोग में बदलना

अर्द्धविकसित देशों में उद्यमी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे बैंक से साख लेकर बचत को विनियोग में बदल दें। जितना अधिक विनियोग होगा, पूंजी निर्माण दर उतना ही तीव्र होगा।

3. Disguised unemployment को बचत संभावना में बदलना

रैगनर नर्क्स के अनुसार " Disguised unemployment वस्तुतः छिपी हुई बचत संभावना को दर्शाती है" ज्योंहि Disguised unemployment को रोजगार में बदला जायेगा आय बढ़ेगी, बचत बढ़ेगी और इसके फलस्वरूप देश में पूंजी निर्माण दर में वृद्धि होगी।

4. बैंक तथा वित्तीय संस्थाओं का विस्तार

देश में बैंक तथा वित्तीय संस्थाओं के शाखाओं में विस्तार किया जाना चाहिए जिससे बचत में वृद्धि होगी फलस्वरूप निवेश के साथ पूंजी निर्माण दर में वृद्धि होगी।

5. जनसंख्या के तीव्र वृद्धि पर रोक

पूंजी निर्माण दर में वृद्धि करने के लिए जनसंख्या को नियंत्रण में लाना आवश्यक है जैसे ही परिवार का आकार घटेगा तथा बचत की संभावनाएं बढ़ेगी पूंजी निर्माण दर तीव्र होगा।

—x—

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College
Id - ranisandhya140@gmail.com
ranisandhya140@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner